(MIJ) 2015, Vol No 1, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

अस्तित्व की खोज : आदिवासी महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक स्थिति–एक अध्ययन

THE HUNT FOR LIFE: SOCIO-ECONOMIC STATUS OF TRIBAL WOMEN: A STUDY

डॉ0 अरुणा त्रिपाठी
एसोसिएट प्रोफेसर–समाजशास्त्र
रा.स्ना.महा. फतेहाबाद, आगरा

Dr Aruna Tripathi
Associate Professor, Dept of Sociology
Govt PG College, Fatehabad, Agra

सारांशिका / ABSTRACT

दुनिया की आधी आबादी कही जाने वाली स्त्री जाति हमारे देश में परम्परागत रूप से हाशियें का जीवन जीने के लिये बाध्य है। वर्तमान समय में विभिन्न विमेशों में स्त्री विमर्श के माध्यम से भारतीय स्त्री हाशिये लांघती नजर आती है अपने अस्मिता एवं अस्तित्व के सवाल का जवाब ढूंढ़ती वह गलियारों से शिखर तक प्रयास कर रही है किंतु पित्र संतात्मक समाज की जकड़ से अपनी मुक्ति को तलाशती चंद ये महिलाओं ने स्वयं को स्वयं तक ही सीमित कर लिया है अर्थात हाशिये के समाज की महिलाओं की ओर उनका ध्यान नहीं गया जिसके परिणामस्वरूप दलित विमर्श की भी अनदेखी के कारण दलित स्त्री लेखन उभर कर सामने आया यहां तक पहुंचकर भी स्त्री समाज का एक हिस्सा उपेक्षित ही रह जाता है पुरुषों के समान हकदार कही जाने वाली आदिवासी स्त्री क्या अपनी अस्मिता एवं अस्तित्व के सवाल से मुक्त है? कहने के लिये तो मुक्ति शब्द बड़ा ही आसान है पर जलने का दर्द तो राख ही जानती है यह सत्य है कि आदिवासी स्त्री कभी अपने समाज के पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलकीली बाहरी सभ्य समाज के घुसपैठ के साथ ही आदिवासी स्त्रियों का हक भी छीन लिया गया। आदिवासी स्त्री एक ओर वर्तमान बाजारवाद के कारण मुख्य धारा के समाज से शोषित है वहीं दूसरी तरफ स्त्री होने के कारण अपने ही समाज में शोषित है। यह शोध पत्र आदिवासी स्त्रियों की वेदना को दर्शाते हुए पितसत्तात्मक समाज के जकड़न से उनकी मुक्ति की के अध्यन का एक विनम्र संक्षिप्त प्रयास है।

मुख्य शब्द–शोषित, सामाजिक, पित्त सत्तात्मक, सशक्त इत्यादि।

Women who are said to be half of the world's population have grown up in our country to lead a traditionally marginalized life. In the present time, women are seen crossing the margins through discourse in various discourses. Searching for the answer to the question of her identity and existence, she is trying from the corridors to the top. But these few women, in search of freedom from the bondage of patriarchal society, have confined themselves to themselves, i.e. they did not pay attention to the women of the marginalized society. As a result of which Dalit women's writings emerged due to neglect of Dalit discourse. A part of the women society remains neglected till now. Is the tribal woman, who is said to be entitled to the same thing as men, free from the question of her identity and existence? The word liberation is very easy to say but only ashes know the pain of burning. It is true that tribal women used to work side by side with the men of their society. With the infiltration of brightly deaf civilized society, the rights of tribal women were also snatched away. Tribal woman is exploited from mainstream society due to current marketism and on the other hand she is exploited in her own society because of being a woman. This research paper is a humble brief attempt to study the suffering of tribal women from the cause of their patriarchal society.

Keywords: *exploited, social, patriarchal, capable, etc*

विश्व समाज में स्त्री समाज की सबसे महत्वपूर्ण इकाई है जो सामाजिक परिवारों की अभिन्न अंग रही है और आगे भी रहेगी क्योकि प्रचीनकाल से ही स्त्री–पुरूष का जोडा रहा है जो एक परिवार का निर्माण करते हैं और इसी परिवारों से मिलकर ही गांव का निर्माण होता है गांव से ही मिलकर ग्रामपंचायत,जनपद,जिला,राज्य तथा राज्यों से मिलकर एक देश बनता है लेकिन फिर भी हमारे देश में निवाश करने वाली स्त्रियां किसी ना किसी कारण से शोषित हैं। परन्तु सबसे अधिक दयनीय स्थिति आदिवासी स्त्रियों कि है जो शारीरिक मानसिक सामाजिक आर्थिक तथा धार्मीक, इत्यादि कारणों से शोषित है। ऐसा क्यों? जबकि स्त्री विश्व समाज की महत्वपूर्ण इकाई होने के साथ साथ सामाजिक परिवार का अभिन्न अंग है फिर भी इनका शोषण क्यों हो रहा है?

भारत में भिन्न–भिन्न जाति के लोग रहते हैं तथा उनमें जनजाति/आदिवासी भी एक जाति है। इनकी एक सभ्यता तथा संस्कृति होती है तथा एक अलग पहचान। यह पर्वतों, जगलों, पठारों तथा गिरी जंगलों में रहते हैं तथा ये विशिष्ट सामाजिक, धार्मिक जीवन व्यतीत करते है। जनजाति समाज की महिलाओं की स्थिति गैर जनजातीय समाज की महिलाओं से थोड़ी भिन्न हैं जिस प्रकार जनजातीय समाज/आदिवासी के जीवन में भिन्नता देखने को मिलती है। उसी प्रकार यहाँ की महिलाओं की स्थिति भी अलग–अलग होती है। आज आधुनिक युग में जनजातीय महिलाओं तथा गैर जनजातीय सभी महिलाओं का समाज में महत्वपूर्ण योगदान है। परन्तु जनजाति समाज की महिलाएँ गैर आदिवासी महिलाओं की अपेक्षा अधिक परिश्रमी होती हैं। वह सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक सभी क्षेत्रों मे

(MIJ) 2015, Vol No 1, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। परन्तु उनकी स्थिति कमजोर होने का जो सबसे महत्वपूर्ण कारण है। वह अशिक्षा है । आदिवासी महिलाएँ पारिवारिक खर्चों की पूर्ति के लिए बराबर का सहयोग देती है। इसलिए परिवारिक आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान होता है। इसलिए हम इन आदिवासी समाज में महिलाओं की भूमिका सहयोग तथा योगदान को नकार नहीं सकते हैं। जनजातीय समाज तथा जनजातीय महिलाओं की स्थिति पर अनेक विद्धानों ने अपने मत प्रकट किए है तथा अध्ययन किए हैं। तथा अध्ययन पश्चात् उनके सामने जो समस्याएँ और चुनौतियाँ सामने आई हैं उनका समाधान भी सुझाया है तथा सरकार भी जनजातीय समाज के उत्थान के लिए भरसक प्रयास कर रही हैं।

जनजातीय समाज में आदिवासी महिलाओं की अत्यन्त आवश्यकता है क्योंकि महिला के बिना किसी भी समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती है, अर्थात महिला का समाज के उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान है तथा हमेशा से महत्वपूर्ण रहा है तथा रहेगा। महिलाओं की भूमिका को समझते हुए कहा जाता है कि यदि आप घर के लड़के को पढ़ाते हैं तो केवल उस लड़के को ही पढ़ाते है परन्तु यदि आप एक लड़की को पढ़ाते है तो पूरे परिवार पूरे समाज को पढाते है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति से पहले महिलाओं की स्थिति बहुत दयनीय थी चाहे वह महिला जनजातीय समाज की हो या गैर जनजातीय समाज की। परन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् महिलाओं की स्थिति से सम्बन्धित बहुत अध्ययन किए गए तथा आधी आबादी कही जाने वाली महिलाओ के सशक्तिकरण की आवश्यकता महसूस की गई तथा महिलाओं को सशक्त करने के लिए भिन्न–भिन्न प्रयास किए गए महिला आरक्षण उस मार्ग में अत्यंत महत्वपूर्ण था तथा राष्ट्र संघ द्वारा सन् 1971 में महिलाओं की स्थिति पर किया गया अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण माना गया है क्योंकि इसमें महिलाओं की स्थिति की प्रत्येक पक्ष का बहुत गहन अध्ययन किया गया था। इस प्रकार के बहुत अध्ययन किए गए और अध्ययन पश्चात् यह समाने आया कि सामान्य भारतीय नारी की स्थिति बहुत दयनीय है तो आदिवासी समाज की नारी कि स्थिति तो और भी दयनीय होगी।

(MIJ) 2015, Vol No 1, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

आदिवासी स्त्री और उसका समाज :– *स्त्री के बारे में इतना विद्वानों को ज्ञापित है की स्त्री किसे कहा जाता है। रही बात आदिवासी शब्द की है तो जहां तक मेरा मानना है कि सामान्यत जगलों में निवास करने वाले समाज को आदिवासियों के नाम से जाना जाता है जो सदियों से शारीरिक, मानसिक, सामाजिक राजनीतिक,धार्मिक भूस्वामी पूँजीपतियों सेठ साहूकारों , ठेकेदारों आदि से शोषित है तो फिर उनकी स्त्रियों भला कैसे अछूती रह सकती है अर्थात वे भी बुरी तरह से शोषित है। हमारे देश में हिन्दू समाज, मुस्लिम समाज ईसाई समाज, बौद्ध समाज और जैन इत्यादि समाजों का निवास है जो हर एक समाज अनेक उप वर्गों में विभाजित है जैसे हिन्दू समाज को ही ले इस में क्षत्रिय समाज, ब्राह्मण समाज, राजपूत समाज कबीरपथी समाज तथा आदिवासी समाज इत्यादि सामाजिक वर्गों में विभाजित है। इतना तो स्पष्ट हो ही गया है कि जब किसी सामाजिक वर्ग में अनेक उपवर्ग है तो निःसंदेह कह सकते है कि स्त्रियों में शोषण की भिन्नता भी होगी। सर्वप्रथम हम यह कह सकते हैं कि आदिवासी किसे कहते हैं? सामान्यत जगलों में निवास करने वाले समाज जारी आदिवासी के नाम से जाना जाता है। इस सम्बंध में डॉ. विवेकी राय के अनुसार– पिछडे अंचलों, पहाडों और वनों के निवासियों को आदिम आदिवासी माना गया है। इस सम्बध प्रो. गिलानी का मत है कि एक विशिष्ट भू–प्रदेश में रहने वाला, सामान बोली बोलने वाला अक्षरों की पहचान ना कर सकने वाला समूह गुट आदिवासी समाज कहलाता है। आदिवासी शब्द के लिए दोनों परिभाषाएं उपयुक्त नहीं है उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट है जो लोग जंगल में निवास करते हैं जो लकड़ी एकत्रित कर उसे बेचते है, जो कन्दमूल फल एंव जड़ी बूटिया एकत्रित कर उन्हें बेचते है जिनके घर टूटे फूटे घास–भूस से बने रहते है तथा अशिक्षा, अज्ञानता से पुष्ट वनबासियों को आदिवासी के नाम से जाना जाता तथा इस वर्ग में जन्म लेने वाली स्त्री को आदिवासी स्त्री के नाम से जाना जाता है। जिस समाज में माता–पिता का सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि कारणों से शारीरिक, मानसिक, आर्थिक रूप से जीवन शोषित हो तो फिर क्या उनके बच्चों का बचपन ठीक होगा यदि हां तो यह थोथी नैतिकता ही कही जाएगी, जो कि सत्य नहीं होगी बल्कि उनके प्रति अन्याया किया जाएगा और किया भी जा रहा है। जिन बच्चों के माता–पिता की ऐसी स्थिति होगी तो उनके बच्चे कैसे होंगे इसकी कल्पना नहीं की जा सकती है अर्थात ऐसी स्थिति में आदिवासी समाज में स्वस्थ मानसिक समय में भी आदिवासी समाज में ऐसे अधिकांश बच्चे हैं जो कुपोषित है तथा उच्च शिक्षा उनके लिए दूर की बात है वे प्राथमिक शिक्षा भी से दूर रह जाते हैं।*

(MIJ) 2015, Vol No 1, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

आदिवासी महिलाओं की सामाजिक स्थिति

किसी भी समाज की कल्पना बिना महिलाओं की नहीं की जा सकती अर्थात बिना महिला के किसी भी समाज का कोई आस्तित्व नहीं होता है प्रत्येक समाज में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है तथा किसी भी समाज की नींव बिना महिला सहयोग के सोची भी नही जा सकती है। अर्थात जिस समाज में महिलाओं की स्थिति सुदृण होगी वह समाज उतना सृदृ ण तथा सुन्दर होगा क्योकि महिलाएँ स्वयं को नहीं बल्कि पूरे समाज को एक बेटी, एक पत्नी, एक माँ के रूप मे सजा तथा संजो कर रखती है। आदिवासी समाज में महिलाओं की स्थिति में विभिन्नता के होते हुए भी उनका स्तर गैर आदिवासी समाज स्तर से ऊँचा है तथा इस तथ्य को नेहरू जी ने भी माना है। तथा जनजातीय समाज के बारे मे उन्होने कहा है कि "हम आदिवासी क्षेत्रों के मामले को दिशाहीन भटकाव की स्थिति में नहीं रहने दे सकते हैं आज की दुनिया में न यह सम्भव है न यह वांछनीय ही है परन्तु इसके साथ ही हमे इन क्षेत्रों को अति शासन के जोखिम से भी बचाना होगा हमे इन दो सीमान्तों के बीच एक मध्य मार्ग बनाकर काम करना होगा।'' जनजाति समाज में धार्मिक स्तर पर महिलाओ की स्थिति पुरुषों से निम्न होती है पुरुष ही सभी धार्मिक कार्यों को पूरा करते हैं परन्तु महिलाएँ पूर्ण स्वतन्त्रता से नृत्य, संगीत, मनोरजन उत्सव में भाग लेती हैं। जनजातीय समाज में परम्परागत पंचायतों को बहुत महत्व दिया जाता है तथा इन पंचायतों में पूर्णता से केवल पुरुषों को भाग लेने का अधिकार होता है और महिलाओं को इन पंचायतों में भाग लेने या बैठकों में जाने की कोई स्वतन्त्रता नहीं होती है। परन्तु महिलाओं को पंचायतों की बैठकों के सामने अपनी समस्याओं तथा अपने तर्क देने का अवसर प्राप्त होता है। तथा जो समाज पितृसत्तात्मक होता है उनमें पिता के गौत्र में ही विवाह करने पर निषेध है परन्तु माँ के गोत्र में कुछ पीढ़ी तक विवाह ना करने पर जोर दिया जाता है इस समाज में साली विवाह, विधवा विवाह, देवर विवाह का प्रचलन आज भी देखा जा सकता है।

आदिवासी समाज में महिलाएँ कई संस्कारों में भाग लेती हैं जैसे महिलाओं को शमशान में जाने तथा मृतक संस्कारों में समालित होने की पूर्ण स्वतन्त्रता होती है। जबकि सामान्य समाज में महिलाओं को शमशान में जाने पर भी निषेध होता है। आदिवासी महिलाएँ बहुत मेहनती होती है वह केवल घर को ही नहीं सम्भालती है बल्कि खेतों के बोने से लेकर फसल काटने तक अपना पूर्व सहयोग करती हैं तथा वह घर की आमदनी को बढ़ाने के लिए बाहर राज्यो मे जा कर भटो खदानो गृह निर्माण कार्यों तथा रेजा आदि कार्य भी करती है

(MIJ) 2015, Vol No 1, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

परन्तु वह अशिक्षित होने के कारण कम वेतन पर अकुशल और दयनीय श्रमिक के तौर पर कार्य करती है। आदिवासी समाज में आज भी निर्धनता देखने को मिलती है जिसका मुख्य तथा कठोर कारण है इस समाज में शिक्षा की कमी इस समाज में महिलाएँ इतनी स्वतन्त्र तथा मेहनती होती है। परन्तु सिर्फ अशिक्षा के कारण उनकी हालत बहुत कमजोर तथा दयनीय है।

जनजातीय समाज मे आज वर्तमान मे भी धर्म का बहुत महत्व है। प्रत्येक समुदाय का अपना एक अलग विशिष्ट धर्म होता है। तथा उस धर्म पर उनका अटूट विश्वास होता है। आज भी वहा जादू टोना, बली जैसे अन्धविश्वासों में पूर्ण आस्था से विश्वास करते है और यह केवल और केवल शिक्षा की कमी के कारण ही है। तथा प्रत्येक आदिवासी समुदाय का एक विशेष कुल देवता होता है जिसके प्रकोप से बताने के लिए वह बहुत से अंधविश्वासों को मानकर कई जादू टोना आदि का आज भी सहारा लेते हैं। परन्तु समय जैसे तरक्की कर रहा है जनजातीय समाज मे भी परिवर्तन देखने को मिल रहा है आज थोड़ा–थोड़ा ही सही परन्तु आदिवासी समाज धीरे–धीरे शिक्षा के महत्व को समझ रहे है। तथा अपने बच्चों को शिक्षा दिला रहे है। आज बहुत से जनजातीय समाज के लोग कई उच्च पदों पर हैं तथा उनमें महिलालों की कमी है पर महिला बिल्कुल नहीं हो ऐसा नहीं है।

जनजातीय महिलाओं की आर्थिक स्थिति के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि प्रत्येक समाज प्रत्येक में व्यक्ति हमेशा आर्थिक आवश्यकताओं पूर्ति करने में जीवन भर प्रयत्न करता रहता है समाज में भौतिक तथा आर्थिक संगठनों के माध्यम से अपनी सामान्य आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है एक सफल अर्थव्यवस्था के सहारे ही व्यक्ति अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता है। मानव को जीवन को जीने के लिए तथा सम्पति प्राप्त करने के लिए जो भी करना पड़ता है वह अर्थव्यवस्था अर्थात आर्थिक संगठन के अन्तर्गत ही आता है यह कहना गलत नहीं होगा की आर्थिक कार्यों को मानव जीवन के किसी भी पक्ष से पृथक करके नहीं देखा जा सकता ना ही कल्पना की जा सकती है। जनजातीय लोगों के समुदाय के अधिकतर आर्थिक प्रयत्न केवल भोजन के लिए होते हैं इसलिए उनकी अर्थव्यवस्था से अन्य समाजों से भिन्न होती है इनकी अर्थव्यवस्था भौगोलिक वातावरण पर आधारित होती है तथा इन्हें प्रकृति से संघर्ष करना पड़ती है। जनजातीय समाज में पुरुष का अवसर दिया जाता है कुछ कार्य पुरुषों द्वारा किए जाते हैं तो कुछ कार्य महिलाओं द्वारा किए जाते हैं इन समाज में पुरुष शिकार करते हैं तथा मछली पकड़ते

(MIJ) 2015, Vol No 1, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

हैं अर्थात अधिक परिश्रम के सभी कार्य इन्हें दिए जाते हैं। तथा सरल और कम मेहनत के सभी कार्य महिलाओं द्वारा किए जाते हैं। महिलाएँ घर के समस्त कार्य को करती हैं परन्तु इस समाज में जनजातीय महिलाओं को शिकार करना भी सिखाया जाता है जनजातीय महिलाएँ बहुत परिश्रमी होती हैं। इसलिए वह केवल घर के कार्यों को ही नहीं पूरा करती बल्कि स्वयं तरह–तरह की सामाग्री बनाकर हाट (बाजार) में उन्हें बेचने जाती हैं आज भी आदिवासी महिलाएँ कई कार्यों को पूरा करती हैं यहाँ तक की लड़कियाँ पढ़ने भी जाती है तथा बाद पशुओं को चराने भी जाती हैं तथा माँ के कार्यों में भी सहायता करती हैं। आज भी अधिकांशतः महिला द्वारा किए गए कार्यों का अनार्थिक माना जाता है। क्योंकि आधी आबादी कही जाने वाली महिलाएँ जिसके बिना परिवार अधूरा है समाज अधूरा है पूरा देश अधूरा है उन्हें आज भी अर्थशास्त्र की परिभाषा जाना कम जगह सम्मलित किया जाता है। परन्तु स्त्रियाँ इतना महान और परिश्रमी होती है कि बिना जनमो वह अपने कार्यों को तथा उत्तरदायित्वों का पूरी मेहनत से अपनी पूर्ण भूमिका निभा रही हैं। व्याजूद इसके कि उन्हें इस मार्ग पर चलते हुए बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है परन्तु जह हर नहीं मानतीं और अपने दायित्व को निभा रही हैं। इसलिए कह सकते हैं कि महिलाओं का अर्थपूर्ण व्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान है।

महिलाओं का प्रत्येक देश की राजनीति में एक अलग स्थान होता है महिलाएँ राजनीति में प्राचीन समय से ही अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है। इसलिए इस सत्य को नकारा नहीं जा सकता कि प्राचीन समय में महिलाओं की राजनीति में जितनी भागीदारी थी उतनी कभी नहीं रही वेशक राजनीति में चाणक्य जैसे महान राजनीतिक जैसी कोई महिला सामने ना आई हो परन्तु बहुत सी महिलाओं ने राजनीति में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका के बहुत से उदाहरण दिए है। वैदिक युग में भी मैत्री, अपाला जैसी महिलाओं ने इस क्षेत्र में ही नहीं बल्कि भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में अपनी भूमिका का प्रदर्शन किया है तथा आज भी कर रही है आदिवासी महिलाओं में ऐसे नाम बहुत कम हैं परन्तु बिल्कुल नहीं है ऐसा नहीं है। परन्तु एक सत्य यह भी है कि इतने उदाहरणों के होते हुए भी आज भी महिलाओं में राजनीतिक चेतना का अभाव है परन्तु आदिवासी समाज में जो समुदाय मातृसत्तात्मक है वहाँ महिलाओं की राजनीति में भागीदारी देखने को मिलती है। यदि देखा जाए तो सामान्य समाज में भी महिलाओं की राजनीति में भागीदारी बहुत कम है तो जनजातीय महिलाओं की क्या होगी परन्तु राजनीति में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाने के लिए सरकार समय–समय पर उनके लिए योजनाएँ आरम्भ कर रही है। तथा यह एक सफल प्रयास है तथा इसमें महिलाओं का

(MIJ) 2015, Vol No 1, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

राजनीति में 33: को आरक्षण एक महत्वपूर्ण कदम है परन्तु सरकार द्वारा चलाई गई योजनाएँ तथा आरक्षण के द्वारा ही महिलाओं की राजनीति में भागीदारी नहीं बढ़ेगी इसके लिए उन्हें स्वयं आगे आना पड़ेगा तथा अपने अधिकारों को समझना होगा शिक्षा प्राप्त करना होगा चाहे वह सामान्य नारी हो या आदिवासी महिला। तभी राजनीति में उनकी भागीदारी सुनिश्चित हो पाएगी।

आदिवासी समाज में महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता पहले ना के बराबर थी तथा कहीं–कहीं तो बिल्कुल नहीं थी परन्तु स्वतन्त्रता के बाद इन आदिवासी महिलाओं में भी राजनीतिक चेतना आई तथा जिसके परिणामस्वरूप जनजातीय महिलाओं ने भी राजनीति में भाग लेना आरम्भ कर दिया पहले परम्परागत पंचायतों में महिलाओं के लिए कोई स्थान नहीं था तथा पुरुषों का ही पंचायतों में वर्चस्व होता था परन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात जनजातीय समाजों में भी परिवर्तन हुआ है। तथा अब परम्परागत पंचायतें भी अपने पुराने रीति रिवाजों को त्याग के नए ढंग से पंचायतों में सदस्यों का चयन नये तरीके से करती हैं। जिनमें महिलाओं को भी राजनीति में प्रवेश करने का पूरा अवसर दिया जाता है। और आज जनजातीय समाज में भी महिलाएँ अपनी सक्रिय तथा महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं परन्तु जनजातीय महिलाओं की राजनीति में बहुत कम गिनती है क्योंकि उनमें शिक्षा का अभाव है जो राजनीति में उनके पिछड़े होने का मुख्य कारण है। परन्तु वह अब धीरे–धीरे शिक्षा ग्रहण कर रही है तथा महिला सशक्तिकरण की ओर बढ़ रही है।

जनजातीय महिला हो या सामान्य वर्ग की महिला अभी भी वह पूर्ण रूप से सशक्त नहीं हुई है क्योंकि अभी महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण के लिए उन्हें बहुत प्रयास करने हैं तथा वह प्रयास भी कर रही हैं। तथा वह दिन दूर नहीं जिस दिन वह प्रत्येक क्षेत्र सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक क्षेत्रों में अपनी विजय का परचम लहरा देगी। जब आधी आबादी यानि महिलाओं को कमजोर नहीं बल्कि पुरुषों के समक्ष खड़े होने का पूर्ण अधिकार होगा तथा वह पूर्णरूप से सशक्त हो जाएगी।

आदिवासी महिलाएँ तथा मानवाधिकार

भारत में महिला स्थिति बहुत दयनीय है चाहे वह सामान्य वर्ग की महिला हो या जनजातीय महिला हो। तथा सरकार की हमेशा यह कोशिश रहती है कि कैसे उन्हें सशक्त बनाया जाए जिसके लिए सरकार ने बहुत से प्रयास किए हैं तथा कर रही है। ऐसा मानव

अधिकार एक ऐसा अधिकार है जिसके द्वारा प्रत्येक मानव को उसके अधिकार मिलते हैं। मानव अधिकार में प्रत्येक व्यक्ति को समान समझा जाता है। उसके साथ लिंग, जाति आदि के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाता है। तथा मानव संरक्षण के लिए योजनाओं, कानूनों को लागू करने में सहायता करता है। तथा 10 दिसम्बर 1948 में सयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा अधिकार घोषणा पत्र मानव अधिकारों के संरक्षण के लिए बहुत महत्वपूर्ण कदम है।

संविधान में स्त्री पुरुष सबको समान दर्जा दिया गया है। तथा संविधान के अनुच्छेद 5 और अनुच्छेद 16, 19, 164, 243, 244, 275, 330, 332, 334, 335, 338, 339, 340, तथा 342 में जनजातियों के संरक्षण के उपलब्ध में योजनाएँ तथा कानूनी संरक्षण के बारे में बताया गया है। तथा 73वें संविधानिक संशोधन तो महिलाओं चाहे वह सामान्य हो या जनजातीय सभी के लिए वरदान के रूप में सामने आया है। मानव अधिकारों के कारण आज प्रत्येक मनुष्य की संरक्षण हेतु नीति, कानून, योजनाएँ है परन्तु यह एक तथ्य है कि महिला वर्ग के उत्थान में मानव अधिकारों का महत्वपूर्ण योगदान है। अब बस आवश्यकता है। कि महिलाएँ स्वयं आगे आकर स्वयं को सशक्त बनाए तथा जनजातीय समाज की महिलाएँ भी अब शिक्षा प्राप्त कर रही हैं तथा अब उनकी सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक स्थिति में सुधार हो रहा है। तथा मानव अधिकारों के द्वारा प्रत्येक महिला को आगे आने के सुअवसर मिल रहे हैं और आज वह खुद को सुरक्षित कर रही है तथा शोषण के विरुद्ध आवाज उठा रही है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 अजु दुआ जैमिनी, हक गढ़ती औरत. कल्याणा शिक्षा परिषद, 2011

2 डा चन्द्रभान बोयर, निर्मिक, महात्मा फूले प्रतिभा संशोधन अनादमी, 2013

3. आदिवासी महिलाओं का शैक्षणिक एवम् सामाजिक, आर्थिक अध्ययन, क्लासिक पब्लिशिग कम्पनी. 2007

4. रेशमा खतखो, जनजातीय महिलाएँ–सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक सांस्कृतिक पर्यावरण के सन्दर्भ में, क्लासिकल पब्लिशिग कम्पनी 2006

5. सुधारानी श्री वास्तव–श्रीमती आशा श्रीवास्तव, महिला शोषण और मानवाधिकार, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, 2004 पत्रिकाएँ–पत्र :

- *पत्रिका*
- *योजना*

(MIJ) 2015, Vol No 1, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

- *कुरूक्षेत्र*
- *पंचायत संदेश*
- *चाणाक्य*
- *समाचार पत्र*
- *हिन्दुस्तान, हिन्दू नव भारत टाइम, दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर*